"घरः एक सपना"

(चरित्रः– औरत, मर्द, व्यक्ति –जो अलग अलग किरदार निभायेगा और कोरस)

(1)

(मंच के एक छोर पर कोरस है और दूसरे छोर पर एक औरत और मर्द बाँधकाम मज़दूरों की तरह मिट्टी ढोने का और टोकरा उठाने का अभिनय करते हैं।)

कोरसः यह, जिन्हें आप देख रहे हैं
वह है, एक मर्द और एक औरत।
इस दुनिया में, दुनिया के किसी भी खंड में, उपखंड में, किसी भी दिशा में, कोई भी देश में;
देश के किसी भी राज्य में बसे, बढ़े, बढ़ते रहनेवाले शहर के किसी कोने में बना रहे हैं घर।
अलबत्ता, वे अपने लिये नहीं;
औरों के लिये बना रहे हैं घर!
यह दो और इनके जैसे कई
करते आये हैं यही काम
सालों से..... सदियों से।

(औरत–मर्द आमने सामने, एक दूसरे को देखते हैं)

कोरसः साथ साथ काम करते करते, बनती हुई इमारतों के नीचे, मकानों के नीचे, घरों के सायें में एक साथ रहते हुए
एक मर्द और एक औरत के बीच
हो जाता है जो कुछ
वह हो गया.... इन दोनों के साथ भी।

(औरत–मर्द एक दूसरे का हाथ पकड़ कर, प्यार से एक दूसरे को देखते हैं)

मर्दः सुनों, मुझसे शादी करोगी? ऐ, हम शादी करके अपना घर बसायेंगें। मैं रोज़ सवेरे काम पर जाऊंगा। तुम रोटी पकाओगी। हम कभी कभी घूमने जायेंगें, पिक्चर देखेंगें, भेल पकौड़ी खायेंगे। फिर हमारे बच्चे होंगें। हम उन्हें ढ़ेर सारा दुलार देंगें। पढ़ायेंगें। आगे बढ़ायेंगें।

(दोनों प्यार से नज़दीक आ जाते हैं)

कोरसः और इस तरह हो गई इनकी शादी
जैसे औरों की भी हो जाती है
घर बसाने की चाहत में।
एक सपना पूरा करने की उम्मीद में।

–––000–––

कोरसः पर हर घर को रहता है कोई न कोई खतरा।
खतरा कुदरत का ही नहीं होता है
ख़तरा होता है व्यवस्थाओं का भी।
और व्यवस्था से ख़तरा होता है अक़्सर
कुछेक लोगों के ही लिये.... नहीं! बल्कि
कई आम लोगों के लिये.... जिन्हें व्यवस्था क़रार देती हैं
कभी चोर– उठाउगीर– गुनहग़ार
और अब तो अक़्सर आतंकवादी भी।

(वही औरत जैसे अपने घर के ओटे पर बैठकर अनाज़ बीन रही है। एक व्यक्ति पुलिस के लिबास में, उसी रंग ढ़ंग के साथ आता है – औरत अस्वस्थ हो जाती है।)

औरतः क्यों? क्या बात है? मेरा घरवाला घर में नहीं है।
पुलिसः वांधा नंइं। हमें तो सिर्फ तलाशी लेनी है।

(वह ओटे पर चढ़ने के लगता है, औरत दरवाजे पर खड़ी हो कर घर को ढाँप लेती है)

औरतः काहेकी तलाशी? पर क्यों....?
पुलिसः (डंडे से औरत को हटाने की कोशिश) इस बस्ती के सारे घरों की तलाशी करनी है। उपर से ऑर्डर है। हटो...
औरतः ख़बरदार.... आगे मत बढ़ना! आख़िर मतलब क्या है ऐसी हरक़तों का?
पुलिसः हट बे! ज़्यादा भोली मत बन। सहर में टेन्सन चल रहा है। फिर रथयात्रा आनेवाली है... तलाशी का ओर्डर है– उपर से। (औरत डंडा पकड़ कर रोकने की कोशिश करेगी।) देख बाई... अकेली समझ के नरमी से बात करता हूँ; ज्यादा गरमी दिखायेगी तो (उसे ढ़केल कर घर में घुस जाता है) (औरत भी तैश में आकर पिछे जाती है।)
औरतः हम गरीबों के घर में क्या हो सकता है? (थोडी पलों में अंदर से घरका सामान बाहर फैंका जाता है– जैसे कुछ बरतन, मटका, गुदडी.... साथ में पुलिस की आवाज़)
पुलिसः (दरवाज़े से चीज़ों को फैकता हुआ) देखो ज़्यादा शाणपट्टी मत दिखाओ.... उधरवाले घरों से चरस बरामद हुई है.... तुम साले; पता नहीं, बम–बन्दूके छीपाकर रखने वाले.... साले.... अपने घरों में कैसे कैसे अड्डे चलाते हो सब पता है... (चीज़ें आती रहती हैं)
औरतः (चीखकर) बस कर मुए.... अगर हमारे घर में अड्डे चलते हैं तो वह तुम्हारी दया से.... बस कर.... नासपिटे...

(पुलिस घर का सामान रफ़–दफा कर के बाहर आ जाता है.... औरत चीखती हुई पिछे आती है)

पुलिसः (डंडा घुमाता हुआ, गंदी नज़रों से उसे देख कर निकलता हुआ) अबे... हराम... घर में नहीं है छिपा के रखा होगा..... सालों.... ऐसे ही उपर से ओर्डर नहीं आते हैं तुम्हारेवालों के लिये!!!

(वह निकल जाता है; औरत कुछ पल अपना बिखरा हुआ सामान देख कर सिसक उठती है)

औरतः क्या मिला? क्या मिला तुम्हें... हमारा बना–बनाया घर बिखेर कर?.... (फिर पागल की तरह बैठ कर सब बटोरने लगती है)

कोरसः कोम्बिंग.... होती रहती है....
जब भी व्यवस्था कुचलना चाहती है किसी को
जब भी कानून बचाना चाहता है किसी को.... होती रहती है
कोम्बिंग शहर की ऐसी बस्तियों में।
जब जब व्यवस्था और कानून अपने घिनौने चेहरे को
छिपाना चाहते हैं तब तब बढ़ जाते हैं इनके नाखून और नोंची जाती है, ख़रौंची जाती है ग़रीबों की बस्तियां।
क्योंकि इनके घर बन जाते है बदमाशियों के मुख़ौटे इस कानून और व्यवस्था के।
कोम्बिंग.... फ़ेरना कंघी का... बेतरतीब, उल्झे हुए बालों में
कोम्बिंग.... फ़ेरना अपने डंडे, बंदूक और क़लम की नोंक को इन उल्झे हुए, बेतरतीब, बिखरे हुए लोगों में।
और निकाल कर फ़ैके जाते हैं ये लोग,
धर लिये जाते हैं 'पोटा' और 'टाडा' में।
जैसे.... कुचली जाती हैं जुंएं नाखूनों से।

घर और कोम्बिंग..... कोम्बिंग और घर
जैसे कि इनके माथों पर, हाथों पर
खींचीं गई लकीरें.... क़िस्मत के नाम!
क़िस्मतः जो झूठ और मक्कारी
अन्याय और शोषण का एक
जायज नाम है.... अपनी व्यवस्था में,
अपने क़ानून की नज़रों में।

———000———

कोरसः सांसे चल सकती हैं.... धरम और जाति के बंधन से परे। ज़िन्दगी हो सकती है धरम और जाति के बिना। पर घर की होती है कोई न कोई जाति.... और घर चलते हैं किसी न किसी धरम के पहियों पर.... और जलते भी हैं किसी न किसी धरम के नाम पर।

(क़ौमी दंगों की पहचान देते हुए नारे गूंज उठते हैं – "जय श्री राम" "बजरंग बलि की जय" और दंगें का दृश्य– लोगों की हायपिट– या अल्ला.... आदि चीख–पुकार। कोरस द्वारा दंगा अभिनीत हो सकता है। उस में घिरा हुआ वह दंपति। फिर धीरे धीरे थमती आवाज़ें – चीख़ें....)
(एक पल के बाद औरत गोद में बहुत ही छोटा बच्चा थामें बैठी दिखेगी – मर्द उसी बग़ल में बैठा है– निराश और निढ़ाल)

कोरसः मंदिर – मस्ज़िद बनाने के जुनून ने
उजाड़ के रख दिये थे कई घरों को.... उस बरस।
आग की लपटों की छांव में
तहसनहस हुए शहरों में.... गांवों में
रेल्वेप्लेटफार्म पर, स्कूल के अहातों में
बनाई गई राहत–शिबिरों में

कई बच्चों का जनम हुआ था.... उस बरस।
ऐसे ही एक बच्चे ने
जनम लियाः बेघर माँ–बाप की गोद में

———000———

औरतः (गोद के बच्चे को प्यार से देखकर दुलारती है –फ़िर चेहरे पर दृढ निश्चय से) बस, बहुत हो चुका! बहुत कुछ गंवा चुके। अब हमें बचा के रखना है यह सारा –जो हमारा है। अब मैं और ज़्यादा सहनेवाली नहीं हूँ।

मर्दः और मैं भी! अब बरदाश्त करना गुनाह है!

औरतः अब हमें अपने बच्चे के भविष्य के बारे में सोचना होगा।

मर्दः खास तो इसकी सलामती के बारे में....

औरतः (कटाक्ष से) सलामती!! जब भी मारकाट होती है, आगज़नी होती है, गोलियां चलती हैं; तब हम ग़रीब ही मरते हैं। हम ही बेघर होते हैं। उन लोगों के महल–बंगले तो सलामत ही रहते हैं!

मर्दः मुझे तो फ़िकर है कि ये राहतकेम्प बंद हो जायेंगें तो हम कहां जायेंगें?! अपने पुरानेवाले एरिये में हरगिज़ नहीं जाएंगें।

औरतः क्यों?

मर्दः अब हमारा वहां बचा ही क्या है? हम अपना नया घर उस अपने एरिये में बसायेंगें।

औरतः अपना एरिया?

मर्दः हां! अपना एरिया मतलब कि सलामत एरिया।

औरतः भई, हम तो जहां थे वहां सलामत ही थे ना?
ये मारकाट करनेवाले थोड़े ही हमारे एरिये के थे? वे तो बाहरवाले थे।

मर्दः उंहूं.... तुम बहुत भोली हो। सब कुछ बदल गया है। अब हमें अपने मुन्ने को उस आगमें झोंकना....(दहशत से ख़ामोश हो जाता है औरत उसे रोकती है)

औरतः छीः ऐसा क्यों बोलते हो?! हमें तो.... (बच्चे को दुलारते) हम अपने मुन्नेलाजा को उछीवाले घल में ले जायेंगें.... वहां खाला होगी, लछमी काकी होगी.... लुसी आंटी और मंजी बेबे तो मुन्ने को देखकर कितनी खुश हो जायेंगीं? भई, हमछे अकेले तो मुन्नेलाजा छभाले नंइ जायेंगें। छ... ब... का छाथ चाहिए, छ–ब–का प्याल चाहिए... हैं ना मुन्लालजा?!
(इठलाकर) नहि, हम तो वापस उसी घर में जायेंगें।

मर्दः (बौखलाकर) मरना है क्या? (शर्म से दो पल चूप हो जाता है) सुनो! मैंने सोच लिया है; हम अपने लोगों के एरिये में ही नया घर लेंगें....

औरतः अपने लोग?

मर्दः हां, हमारे धरमवाले लोग। अब तो उसी में सलामती है।

औरतः क्या?.... तो.... अब.... तुम भी? (आश्चर्य और कुछ गुस्से से मर्द को देखती है। मर्द के चेहरे पर झल्लाहट है पर दृढता भी है)

———000———

कोरसः लोग
सलामती के नाम पर क्या से क्या हो जाते हैं!
सलामती और घर... घर और सलामती...

किस तरह जुड़े हुए हैं एक दूसरे से!

- पर ज़रा ग़ौर कीजिये। पूछिये.... महिलाओं के लिये घर मानें क्या? किसका घर? बाप का? –जो कि बचपन में बड़ी मुश्किल से मिलता है?.... और जहां से उसे जाना ही पड़ता है –पिया के घर! पता नहीं वह पिया उसको अपनी कितनी मानता होगा? और ख़ैर.... फिर बुढ़ापे में गनीमत है कि उसे सहारा मिल जाता है बेटे के घर में!.... मगर कहां है उसका अपना घर?
- और उसी तरह....आदिवासियों के –मूलनिवासियों के कहां होते हैं घर? उन्हें तो होना पड़ता है बार बार बेघर! अकाल में.... बाढ़ में.... रोटी की तलाश में.... बड़ी बड़ी विकास योजनाओं के नाम.... बह जाते हैं –डूब जाते हैं... इन्हीं लोगों के घर। और चलते हैं कल–कारखानें, धमधमाती हैं रेलगाडियां, सजधजती है अमीरों की ज़िन्दगी.... जब खतम हो जाते हैं घर....इनके।
- और बताईये भला, कहां होतें हैं, दलितों के घर? गांव के ठे–ठ दक्षिण छोर पर। शहर के गंदे–से–गंदे इलाके में। गलीच बस्तिओं में। अगर गांव में घर बस भी गये दो–चार तो उन पर बढ़ जायेंगें अत्याचार! कहां टिक पाते हैं इन के घर?
- और इसी देश में अलग धरम पालनेवालों के धर तो कहा जाता है कि होने चाहिये पाकिस्तान में या फिर कब्रस्तान में!.... तो क्या है घर का मतलब इन सब के लिये?
- गरीबों के पास कहां होता है अपना–सलामत घर?!

———000———

(औरत आंगन में झाड़ू लगा रही है कि मर्द हाथ में टिफिन लेकर बौखलाया हुआ आता है)

मर्दः अजी, सुन रही हो? अपना मुन्ना कहां है? (इधर उधर देखता है)

औरतः क्यों? क्या बात है? मुन्ना तो वहां खेल रहा है –मोहल्ले के बच्चों के साथ।

मर्दः बुला लो उसे... मुन्ना... ऐ मुन्ना.... आ जा बेटा! घर में आ जा।

औरतः पर हुआ क्या? ऐसे बौखला क्यों रहे हो?

मर्दः मोहल्ले के बाहर देख.... उधर.... बुल्डोझर खड़े है.... दो.... ये बड़े बड़े.... और पुलिस सब के घर खाली करवा रही है।

औरतः पर क्यों? ऐसे कैसे हो सकता है?

मर्दः हो सकता है.... हो रहा है। यहां की ज़मीन पर और कुछ बननेवाला है! हमें खाली करना ही पड़ेगा; वरना....(इधरउधर, पागलों की तरह सामान बटोरने लगता है)

औरतः इसका मतलब कि औरों को बसाने के लिये हमारे घर उजाड़े जायेंगें?

कोरसः ऐसा ही होता है
गरीबों के घरों के साथ
ये ही होता आया है।
उज़ाडे जाते हैं उन्हें विकास के नाम पर।
जब भी नये रास्ते बनवानें हों.... उजड़ते हैं गरीबों के घर।
जब भी अमीरों के बंगलों बनवानें हों.... उजड़ते हैं गरीबों के घर जब भी शहर को खूबसूरत बनाना हों.... गरीबों के घर ही बदसूरत लगते हैं उन्हें; और उजाड़े जाते हैं गरीबों के घर।

———000———

मर्दः वो देखो..... आ गया बुल्डोझर!
औरतः हम उन्हें यहां तक नहीं पहुंचने देंगें....।
मर्दः हां हां.... हम बस्ती की तोड़ फोड़ का मुकद्दमा करेंगें.... कोरट में जायेंगें!
कोरसः कौन सी कोरट ने ग़रीबों को इन्साफ़ दिलाया है?
औरतः हम रोड पर उतरेंगें....
मर्दः हां हां.... हम कोरट के बाहर लडेंगें।
कोरसः लड़नेवालों को डराया जाता हे, सताया जाता है, तोड़ दिया जाता है।
औरतः हम कांच के ख़िलौने नहीं हैं....
मर्दः हम फ़ौलादी हथौड़े हैं।
कोरसः हथौड़े छीन लिये जाते हैं।
औरतः हम अपने हाथ– अपनी मुट्ठियां लहरायेंगें।
मर्दः हम एक–दो नहि; सारे साथ मिलके लड़ेंगें।
औरतः हम दिल से लड़ेंगें..... दिमाग़ से लड़ेंगें..... आखरी दम तक लड़ेंगें। लड़ते ही रहेंगें...
कोरसः वो... वो... आ गया बुल्डोझर....
औरतः हम उस के आगे बिछ जायेंगें।
मर्दः सब साथ में मर जायेंगें पर घर नहि छोडेंगें, हक नहीं छोडेंगें....

(मर्द–औरत हाथ बांध कर हिंमत से आगे जाते हैं.... कोरस भी धीरे धीरे हाथों को जोड़ कर जंजीर बनाते हैं.... मंच पर जैसे सामना कर रहे हों वैसे खड़े हो जाते हैं और समूहगान शुरू करते हैं)

गीत

"हम मेहनतकश....."

———000———